सूचना

निम्नलिखित सेवाकेंद्रों के मकान परिवर्तित हुए हैं अत: नया पता लिख रहे हैं।

1. Brahma Kumaris
79, 3rd Main Road
Kasturibai Nagar, Adyar
CHENNAI - 600020 (TN)

2. Brahma Kumaris
10, Govind Rajula Street
Nr. V. M. Marbles
Aruna Nagar
KARAIKUDI 623001(TN)

3. Brahma Kumaris
Ward No. 5, Niazpur,
NURPUR - 176002 (HP)

''मीठे बच्चे – बाप है भक्तों और बच्चों की रखवाली करने वाला भक्त-वत्सलम्, पतित से पावन बनाकर घर ले जाने की जिम्मेवारी बाप की है, बच्चों की नहीं''

प्रश्नः- बाप का कल्प-कल्प फ़र्ज क्या है? कौन सा ओना बाप को ही रहता है?
उत्तरः- बाप का फ़र्ज है बच्चों को राजयोग सिखलाकर पावन बनाना, सभी को दु:ख से छुड़ाना। बाप को ही ओना (फिकर) रहता है कि मैं जाकर अपने बच्चों को सुखी बनाऊं।

गीतः- मुखड़ा देख ले प्राणी.....

ओम् शान्ति। यह कौन पूछ रहा है? बाप जिसको आलमाइटी अथॉरिटी कहते हैं। बाप की महिमा तो करते हैं वा लिबरेटर, गाईड भी कहते हैं। वह है सबकी सद्गति करने वाला। वह सर्व का दु:ख-हर्ता सुख कर्ता है। समझते हैं कि वह है परमधाम का रहने वाला। परन्तु अज्ञान के वश कह दिया है, सर्वव्यापी है। सब भगत हैं बच्चे और भगवान है बाप। यह तो जरूर सब बच्चों को समझाना चाहिए कि दु:ख हर्ता सुख कर्ता हमारा बाप है। उनका नाम गाया जाता है – भगत वत्सलम्। यह नाम कोई गुरू गोसाई को नहीं दे सकते हैं। अब बच्चे या भक्त तो बहुत हैं उन पर रहम करने वाला एक ही बाप है। सारी दुनिया को एक बाप ही आकर सुख शान्ति देते हैं। समझाते भी हैं लक्ष्मी-नारायण के राज्य को बैकुण्ठ वा स्वर्ग कहा जाता है। इस समय कलियुग है, तो बाबा को कितना ओना होगा। हद के बाप को भी फुरना होता है। यह है बेहद का बाप। मालूम होना चाहिए कि सभी भक्तों का कल्याणकारी एक बाप ही है, उनको ही फुरना रहता है कि बच्चों को जाकर सुखी बनाऊं। जब मनुष्यों पर आफतें आती हैं तो सभी भगवान को याद करते हैं, पुकारते हैं हे परमपिता परमात्मा बचाओ। अभी तुम बच्चों के सम्मुख बाप बैठा है। बाप कहते हैं क्या मुझे ख्याल नहीं होगा कि अभी सब पतित हो गये हैं। मैं जाकर सबको राजयोग सिखलाकर पावन बनाऊं। यह तो मेरा कल्प-कल्प का फ़र्ज है। भल इस समय पुकारते तो सभी हैं परन्तु वह लव नहीं है। अब तुम सारे ड्रामा को समझ गये हो। बाप कहते हैं मैं तुमको पावन बनाने आया हूँ। यह मेरी बात मानों तो सही ना। सन्यासी भी इन विकारों को छोड़ते हैं। उन्हों का है हद का सन्यास। हमारा है बेहद का सन्यास, सारी पुरानी दुनिया का। बाप कितना अच्छी तरह समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ प्रैक्टिकल में हैं ना। बोर्ड भी लगा हुआ है। कितने ढेर बच्चे हैं, सब कहते हैं मम्मा बाबा। गांधी को भी फादर ऑफ नेशन कहते हैं। वह भी भारत का फादर था, उनको सारी दुनिया का तो नहीं कहेंगे ना। सारी दुनिया का पिता तो एक ही है। वह बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, तुम इन पर जीत पहनो। इनमें कोई सुख नहीं है। पवित्र देवी देवताओं के आगे जाकर सिर झुकाते हैं। समझते कुछ नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं बच्चे यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो तो 21 जन्मों के लिए तुम्हारी काया कल्पतरू कर दूँगा। बहुत सहज है। परन्तु माया ऐसी है जो हरा देती है। भल 4-6 मास पवित्र रहते हैं फिर भी कमर टूट पड़ती है। तुम जानते हो बाबा कल्प पूर्व के समान समझा रहे हैं। कौरव पाण्डव भाई-भाई दिखाते हैं। दूसरे गाँव

वा देश के नहीं हैं। पतित-पावन बाप, अविनाशी खण्ड भारत में ही आते हैं। यह बर्थ प्लेस है। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। निराकार शिव परमात्मा जन्म लेते, नाम शिव है। शरीर तो नहीं है। और सबके ब्रह्मा विष्णु शंकर के भी चित्र हैं। ऊंचे ते ऊंचा एक भगवान है, वह इनमें प्रवेश करते हैं। परन्तु आया कैसे? कब आया? किसको भी यह मालूम नहीं है। भारत में ही शिव जयन्ती मनाते हैं। मन्दिर भी सबसे बड़ा यहाँ ही है, इसमें भी लिंग रख दिया है। समझाना चाहिए शिव जरूर आते हैं। शरीर बिगर तो कुछ होना ही नहीं है। सुख दु:ख आत्मा शरीर के साथ ही भोगती है। आत्मा अलग हो जाती है तो कुछ भी कर नहीं सकती। शिवबाबा ने भी कुछ किया होगा। वह पतित-पावन है परन्तु कैसे आकर सबको पावन बनाते हैं, यह कोई जानते नहीं। अब बाबा साधारण तन में प्रवेश कर पार्ट बजाते हैं। गाते भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना। तो पतित दुनिया में ब्रह्मा कहाँ से आया? परमात्मा स्वयं कहते हैं मेरा शरीर तो है नहीं। मैंने इनमें प्रवेश किया है। मेरा नाम शिव है। तुम आकर मेरे बने हो, तभी तुम्हारा भी नाम बदलता है। सन्यासियों के पास जाकर सन्यास करते हैं तो उन्हों के भी नाम बदली होते हैं। अब बाप सम्मुख आया है। ईश्वर जिसको आधाकल्प तुमने याद किया फिर चलते-चलते तुम उनको भी भूल जाते हो। सन्यासी तो सुख को मानते नहीं, वह सुख को काग विष्टा के समान समझते हैं। स्वर्ग का नाम तो बाला है। कोई मरता है तो भी कहते हैं स्वर्ग गया। नई दुनिया को सुखधाम, पुरानी दुनिया को दु:खधाम कहा जाता है। बाप इतना समझाते हैं तो क्यों नहीं उनकी मत पर पूर्ण रूप से चलना चाहिए। बाबा आया है सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देने। बाबा का पार्ट है बच्चों को वर्सा देना। निराकार रचयिता बाप से वर्सा कैसे मिलता है, यह भी तुम जानते हो। मेरा परिचय तुमको कहाँ से मिला? भगवानुवाच। क्या मैं कृष्ण हूँ! मैं ब्रह्मा हूँ! नहीं। मैं तो सभी आत्माओं का निराकार बाप हूँ। और कोई नहीं कह सकता। भल अपने को शिवोहम् कहते हैं परन्तु यह नहीं कह सकते कि मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ। वह अपने को गुरू कहलाते हैं। वहाँ बाप तो मिला नहीं, टीचर मिला नहीं, फट से गुरू मिल गया। यहाँ कायदे का ज्ञान है। यहाँ तुम्हारा बाप टीचर गुरू मैं एक ही हूँ। वन्डर खाना चाहिए – सारी पतित दुनिया को कैसे पावन बनाते होंगे! 21 जन्म का वर्सा देने वाले बाप की मत पर कदम-कदम चलो। माया दुश्तर है। बाबा-बाबा कहते हैं, पढ़ते भी हैं, फिर भी अहो माया वश बाप को फारकती दे देते हैं इसलिए कहते हैं खबरदार रहना। बाप को बच्चे फारकती देवे तो कहेंगे ना – मैंने तुम्हारी इतनी पालना की फिर भी मुझे छोड़ दिया। यहाँ तो औरों की सेवा करनी है, औरों को आप समान बनाने की। यह मदद मेरी नहीं करेंगे? फारकती दे नाम बदनाम कर देते हैं। कितना मुश्किल होती है। अबलाओं पर बहुत अत्याचार होते हैं। ज्ञान यज्ञ में विघ्न पड़ते हैं। माया कितने तूफान लाती है। भक्ति मार्ग में यह नहीं होता।

बाप कहते हैं - सयाने बच्चे, तुम मेरी मत पर चलो। अपने दिल रूपी दर्पण में देखना चाहिए कि मैंने कोई विकर्म तो नहीं किया। बाप का बन थोड़ा भी विकर्म करते हो तो सौ गुणा दण्ड हो जाता है। बहुत नुकसान कर देते हैं। देखना है हम अपना खाता जमा करते हैं या ना करते हैं। माया के भूतों को भगा देना चाहिए। ऐसी अवस्था हो तब दिल पर चढें तो तख्त पर भी बैठेंगे।

वह भी समझते हो हमारा तख्त क्या होगा। शिवबाबा का मन्दिर बनाते हो तो तुम्हारा महल कितना सुन्दर और ऊंच होगा। मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ, तुम्हारे पास अथाह धन होगा। फिर तुम मेरा मन्दिर बनाते हो। सारा धन मन्दिर बनाने में तो नहीं लगायेंगे। अभी तुम जानते हो हम विश्व के मालिक थे। वहाँ विश्व महाराजन को धन दाता कहेंगे, उसने भक्ति मार्ग में कितना बड़ा मन्दिर बनाया। तुम भी बनाते हो। वहाँ द्वापर में सभी राजाओं के पास मन्दिर रहता है। पहले-पहले बनाते हैं शिव का मन्दिर फिर देवताओं का बनाते हैं। अभी बाप तुम बच्चों को कितना सत्य समाचार सुनाते हैं। तुम बच्चों को इस पढ़ाई से बहुत खुशी होनी चाहिए। तुम बच्चे जानते हो पुरुषार्थ से हम यह बनेंगे, फिर श्रीमत पर क्यों नहीं चलते। तुम भूल क्यों जाते हो। यह तो कहानी है। घर में मित्र सम्बन्धी कहानियाँ सुनाते हैं। बाप भी तुमको सारे सृष्टि के आदि मध्य अन्त की कहानी सुनाते हैं। तुम 5 हजार वर्ष पहले विश्व के मालिक थे। बाबा रोज़ यह कहानी सुनाते हैं। तुम बच्चे बन जाओ। अपने को लायक बनाओ - राज्य-भाग्य लेने के। यह है सत्य-नारायण की कहानी। यह कहानी तुमको सुनकर फिर औरों को सुनानी है, अमर बनाने के लिए। फिर भक्ति मार्ग में कथायें सुनायेंगे। फिर सतयुग त्रेता में यह ज्ञान भूल जायेगा। बाप कितना साधारण चलते हैं। कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट हूँ। जब तुम दु:खी बनते हो तो मुझे बुलाते हो कि हमको आकर विश्व का मालिक बनाओ। पतितों को पावन बनाओ। मनुष्य समझते थोड़ेही हैं। तुम समझते हो कि बाबा हमको पतित से पावन बना रहे हैं, तो बाबा को भूलना नहीं चाहिए। तुम्हें ऊंच सर्विस करनी है। बाप को याद करना है और घर चलना है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- रोज़ अपने दिल रूपी दर्पण में देखना है कि कोई भी विकर्म करके अपना वा दूसरों का नुकसान तो नहीं करते हैं! सयाना बन बाप की मत पर चलना है, भूतों को भगा देना है।

२- बाप जो सत्य समाचार वा कहानी सुनाते हैं वह सुनकर औरों को भी सुनानी है।

वरदान:- परखने की शक्ति द्वारा कुसंग व व्यर्थ संग से बचने वाले शक्तिशाली आत्मा भव

कई बच्चे कुसंग अर्थात् बुरे संग से तो बच जाते हैं लेकिन व्यर्थ संग से प्रभावित हो जाते हैं, क्योंकि व्यर्थ बातें रमणीक और बाहर से आकर्षित करने वाली होती हैं इसलिए बापदादा की शिक्षा है–न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ करो, न व्यर्थ देखो, न व्यर्थ सोचो। ऐसे शक्तिशाली बनो जो बाप के सिवाए और कोई भी संग का रंग प्रभावित न करे। परखने की शक्ति द्वारा खराब वा व्यर्थ संग को पहले से ही परखकर परिवर्तन कर दो-तब कहेंगे शक्तिशाली आत्मा।

स्लोगन:-

सदा हल्केपन का अनुभव करना है तो बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखो।

भी नहीं है। सतयुगी राजाई में फिर भक्ति का पता ही नहीं रहता है। भक्ति में भी कितने सुन्दर गीत गाते हैं हे प्रभु तेरी लीला विचित्र है। यह तुम बच्चे ही समझ सकते हो और कोई इस लीला को जानते ही नहीं। बाबा से हमको कितना वर्सा मिलता है। सारा दिन बुद्धि में ख्याल चलना चाहिए, कैसा वन्डरफुल खेल है। वन्डरफुल इसकी समझानी है। बाप की लीला कितनी अच्छी है। तुम इस बेहद के नाटक को जानते हो, फिर जो पद मिलता है उनको भी देख हर्षित होते हो, मनुष्य नाटक देख खुश होते हैं ना। वह वैरायटी नाटक होते हैं, यह एक ही नाटक है। इस नाटक को जानने से हम विश्व के मालिक बन जाते हैं। कितनी वन्डरफुल बात है। बाप द्वारा तुमने ही जाना है। इन बातों में रमण करना पड़ता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते 2-3 घण्टा निकाल, वह नाटक देखकर आते हैं। वह भी किससे पूछा जाता है क्या? बुद्धि में बैठ जाता है। वैसे यह भी बेहद का नाटक है, यह क्यों भूलना चाहिए! इस चक्र की स्मृति तो बिल्कुल ही सहज है, इसको और कोई नहीं जानते हैं। तुम बुद्धि से जानते हो और फिर दिव्य दृष्टि से देखते भी हो। आगे चल और भी बहुत ही सीन सीनरियाँ देखेंगे। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप समान महादानी बनना है। सबको सुख-शान्ति का वर्सा देना है। ज्ञान को धारण कर फिर उगारना है।

२- बेहद नाटक को देख सदा हर्षित रहना है। प्रभू की लीला और यह ड्रामा कितना विचित्र है - इसका सिमरण कर मजे में रहना है।

वरदान:- स्वमान में स्थित रह हद की इच्छाओं को समाप्त करने वाले इच्छा मात्रम् अविद्या भव

जो स्वमान में स्थित रहते हैं उन्हें कभी भी हद का मान प्राप्त करने की इच्छा नहीं होती। एक स्वमान में सर्व हद की इच्छायें समा जाती हैं, मांगने की आवश्यकता नहीं रहती। हद की इच्छायें कभी भी पूर्ण नहीं होती हैं, एक हद की इच्छा अनेक इच्छाओं को उत्पन्न करती है और स्वमान सर्व इच्छाओं को सहज ही सम्पन्न कर देता है इसलिए स्वमानधारी बनो तो सर्व प्राप्ति स्वरूप बन जायेंगे, अप्राप्ति वा इच्छाओं की अविद्या हो जायेगी।

स्लोगन:-

हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर लेने वाला ही रीयल गोल्ड है।

"मीठे बच्चे - जो खुशी खुद को मिली है, वह सबको देनी है, तुम्हें सुख-शान्ति बांटने का धन्धा करना है"

प्रश्न:- तुम बच्चों को इस बेहद ड्रामा की हर सीन बहुत ही पसन्द है - क्यों?

उत्तर:- क्योंकि स्वयं क्रियेटर को यह ड्रामा पसन्द है। जब क्रियेटर को पसन्द है तो बच्चों को भी अवश्य पसन्द होगा। तुम किसी बात में भी नाराज़ नहीं हो सकते। तुम जानते हो यह दु:ख-सुख का नाटक बहुत सुन्दर बना हुआ है। इसमें हार-जीत का खेल चलता रहता है, इसे खराब कह नहीं सकते। दिन भी अच्छा तो रात भी अच्छी... इस ड्रामा में जो भी पार्ट मिला हुआ है, उसे खुशी से बजाने वाले बहुत मजे में रहते हैं। इस बेहद नाटक की नॉलेज का सिमरण करने वाले सदा हर्षित रहते हैं। बुद्धि भरपूर रहती है।

गीत:- हमारे तीर्थ न्यारे हैं...

ओम् शान्ति। वास्तव में स्कूल में कोई गीत नहीं गाये जाते हैं। यह पाठशाला है। फिर भी यहाँ गीत क्यों गाये जाते हैं? सतयुग में तो यह गीत नहीं गाये जाते हैं। अभी हम लोग बैठे हैं संगम पर इसलिए भक्ति और गीतों आदि को लेकर उसका अर्थ समझाते हैं, मनुष्य तो अर्थ समझते नहीं। हम अभी न यहाँ हैं, न वहाँ हैं। बीच में बैठे हैं, तो इनका थोड़ा आधार लेते हैं। बच्चों को ज्ञान और भक्ति का राज़ तो समझाया गया है। इस समय तुम ज्ञान सुन रहे हो, भविष्य के लिए। भविष्य के लिए पुरुषार्थ कर कोई प्रालब्ध बनावे, ऐसा कोई मनुष्य नहीं है। तुम पुरुषार्थ करते हो – भविष्य नई दुनिया के लिए। मनुष्य दान पुण्य आदि करते हैं दूसरे जन्म के लिए। वह है भक्ति, यह है ज्ञान, कोई कहते भी हैं ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। सन्यासियों का है हद का वैराग्य। तुम्हारा है बेहद का वैराग्य। वो लोग घरबार से वैराग्य दिलाते हैं, दुनिया से नहीं। वह यह जानते ही नहीं कि तमोप्रधान जड़जड़ीभूत सृष्टि है, इनका विनाश होना है क्योंकि कल्प की आयु बड़ी लम्बी बना दी है। अब बाप बैठ समझाते हैं, बुद्धि भी कहती है यह बात तो बिल्कुल ही ठीक है। मुख्य बात है पवित्रता की, जिसके लिए वह घरबार छोड़ते हैं। तुम सारी पुरानी दुनिया को बुद्धि से भूल जाते हो। पवित्र बनते हो, पवित्र दुनिया में जाने के लिए। तुम्हारी यात्रा है बुद्धि की। कर्मेन्द्रियों से कहाँ जाना नहीं है, तुम्हारा शारीरिक कुछ भी नहीं चलता। अभी हम रूहानी बाप के पास जाते हैं, वह जिस्मानी यात्रायें तो अनेक हैं। कब कहाँ जायेंगे, कब कहाँ। तुम्हारी बुद्धि एक तरफ ही है। इसको अव्यभिचारी भक्ति कहें तो भी हो सकता है। तुम एक को याद करते हो। उन सबकी भक्ति है व्यभिचारी। अनेकों को याद करते हैं। तुम्हारी है अव्यभिचारी रूहानी यात्रा, जिसमें हम जा रहे हैं वापिस अपने घर। वो लोग निर्वाणधाम को घर भी नहीं समझेंगे। कहते हैं पार निर्वाण गया। तुम जानते हो वहाँ हम आत्मायें बाबा के साथ रहती हैं। अभी बाबा हमको लेने के लिए आये हैं। वह समझते हैं हम सब ईश्वर के रूप हैं। कितने शास्त्र आदि पढ़ते हैं, यहाँ तुमको वह कुछ भी नहीं सिखाया जाता है। तुमको तो इन कर्मकान्ड का भी सन्यास कराया जाता है। यह

सब भक्ति के कर्मकान्ड हैं। जैसे प्रभू की गति मत न्यारी है। पहले-पहले तुमको अल्फ सिखाते हैं। बाप खुद ही दलाल बनकर आते हैं। गाते भी हैं, परन्तु समझते नहीं हैं। तुमको कोई भक्ति से घृणा नहीं है। कोई से भी घृणा नहीं आती है, जबकि जानते हैं कि ड्रामा बना हुआ है। हाँ समझाते जरूर हैं कि इस पुरानी छी-छी दुनिया को छोड़ना है, वापिस जाना है। जब भक्ति में थे तो भक्ति से प्यार था। गीत आदि सुनने से मौज आती थी। अब समझते हैं वह तो कोई काम के नहीं थे। सुनने में कोई हर्जा नहीं है परन्तु जानते हैं, यह भी भक्ति की एक्ट है। हमारा अब उनसे बुद्धियोग टूट ज्ञान से जुट गया है। ज्ञान और भक्ति दोनों को तुम जानते हो। मनुष्यों को जब तक ज्ञान न मिले तो भक्ति को ही बहुत अच्छा समझते हैं। हम जन्म-जन्मान्तर भक्ति करते आये। भक्ति से स्नेह बढ़ गया। अब हमारी बुद्धि में है - यह दु:ख सुख, हार जीत का बना हुआ ड्रामा है। तो उन पर रहम आता है, क्यों न उन्हों को भी रचयिता और रचना का ज्ञान मिल जाये, तो बाबा का वर्सा पा सकें। जो खुशी अपने को मिली है वह दूसरों को देनी चाहिए। सिन्धवृति (सिन्धी विलायत में जाने वाले) जब देखते हैं फलानी जगह धन्धा अच्छा चलता है, तो अपने मित्र सम्बन्धियों को भी राय देते हैं कि फलानी जगह चलो, वहाँ कमाई बहुत अच्छी होगी।

तुम जानते हो कि इस रावण राज्य में दु:ख ही दु:ख है। मनुष्यों को यह मालूम नहीं है कि ज्ञान क्या चीज़ है। साधू-सन्त भी नहीं जानते कि इस ज्ञान से स्वराज्य मिलता है। पूछते हैं इस ज्ञान से क्या प्राप्ति होती है? तो लिखा जाता है शान्ति और सुख दोनों मिलते हैं, सो भी अविनाशी। किसको सुख-शान्ति का धन्धा हाथ आ जाता है तो फिर उसमें ही लग पड़ते हैं। हाँ जिस्मानी सर्विस भी कुछ समय के लिए करनी पड़ती है। सतसंग का टाइम भी सुबह और शाम को होता है। माताओं को घर का बंधन रहता है तो उन्हों के लिए फिर दिन का टाइम रखा जाता है। सुबह का टाइम सबसे अच्छा है, फ्रेश माइन्ड होता है। जो सुनते हो उनको फिर धारण कर उगारना है। दुनिया में यह किसको मालूम नहीं कि निराकार परमात्मा भी पढ़ाने आते हैं। भगवानुवाच - तुमको राजयोग सिखलाकर नर से नारायण बनाता हूँ। यह योग बड़ा नामीग्रामी है। मनुष्य विनाशी धन का दान पुण्य करते हैं तो राजाई घर में अच्छा जन्म लेते हैं। यहाँ तो तुम 21 जन्म का वर्सा पा रहे हो। तुम सब कुछ दान करते हो 21 जन्म के लिए। फिर कोई भी पद पाने के लिए पुरूषार्थ नहीं करना पड़ेगा। पद फिक्स हो जाता है। अभी तुम अपना वर्सा बाप से ले रहे हो इसलिए बाबा कहते हैं अच्छी तरह पढ़ो तो जन्म-जन्मान्तर राजा बनो। पहला जन्म मिलेगा ही ऊंच। प्रजा को भी ऊंच मिलता है। राजाई में दास दासियाँ आदि सब चाहिए। जितना पढ़ेंगे, महादानी बनेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। बाबा भी महादानी है। सबको साहूकार बना देते हैं। सुख और शान्ति का वर्सा देते हैं। पहले-पहले सुख में ही आते हैं, क्रिश्चियन के लिए भी कहते हैं - जंगल में रहते थे, पत्ते पहनते थे, विकार की दृष्टि नहीं थी। सभी सुखी रहते थे क्योंकि पहला समय सतोप्रधान फिर रजो फिर तमो में आते हैं। उनका पार्ट अपना और हमारा पार्ट अपना। जो इस धर्म के हैं, उनका ही सैपलिंग लगता है। तुम जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तो झट जान जायेंगे कि यह हमारे धर्म का है वा नहीं है।

तुम बच्चे सबको समझाते हो कि बाप नई दुनिया रचते हैं तो भारत को ही वर्सा मिला था, फिर गुम हो गया। ड्रामा अनुसार वर्सा लेना भी है तो गँवाना भी है। यह चक्र चलता रहता है। इस समय हमने वर्सा गँवाया है, अब फिर से ले रहे हैं। लक्ष्मी-नारायण के राज्य का किसको भी पता नहीं है, इसलिए पूछा जाता है कि लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य कब और कैसे मिला? जैसे उन्हों ने कृष्ण को आगे रख लक्ष्मी-नारायण को गुम कर दिया है और हम फिर लक्ष्मी-नारायण को आगे रख कृष्ण को गुम कर देते हैं। लक्ष्मी-नारायण तो हैं ही सतयुग के, नारायण वाच तो हो न सके। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ संगम पर। लक्ष्मी-नारायण ने जरूर आगे जन्म में संगम पर ही राज्य लिया है। लक्ष्मी-नारायण ही 84 जन्म भोग अब अन्तिम जन्म में हैं। लक्ष्मी-नारायण को भी राज्य देने वाला जरूर कोई होगा ना। तो भगवान ने ही दिया। इस समय तुम बिल्कुल ही बेगर हो फिर प्रिन्स बन जाते हो। प्रिन्स का तो जरूर राजा महाराजा के पास जन्म होगा। अभी तक भी कोई अच्छे-अच्छे राजायें हैं, जिनका प्रजा पर बहुत प्यार रहता है। अभी तुम जानते हो हम राजयोग सीख रहे हैं, जिससे हम राज्य-भाग्य पाते हैं। हमको यह निश्चय है, क्योंकि यह अनादि ड्रामा है। हार जीत का खेल है। जो होता है वह ठीक, क्या क्रियेटर को ड्रामा पसन्द नहीं होगा! जरूर पसन्द होगा। तो क्रियेटर के बच्चों को भी पसन्द होगा। हम घृणा कोई से नहीं कर सकते। यह तो समझते हैं कि भक्ति का भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा सारा अच्छा है। बुरा ड्रामा क्यों कहेंगे! ड्रामा का राज़ बुद्धि में है, जो तुमको समझाते हैं। अभी भक्ति का पार्ट पूरा होता है। अब पुरुषार्थ कर बाप से वर्सा लेना है। बाप कहते हैं यह सब आसुरी सम्प्रदाय हैं, इसमें घृणा की तो बात ही नहीं। ईश्वरीय सम्प्रदाय और आसुरी सम्प्रदाय का तो खेल है। वह कोई अपने को दु:खी समझते थोडेही है। भक्ति करते रहते हैं और समझते हैं एक दिन भगवान आकर भक्ति का फल देगा। घर बैठे कोई न कोई रूप में भगवान आकर मिलेगा; और सन्यासी लोग समझते हैं हम आपेही चले जायेंगे निर्वाणधाम। अपने पुरुषार्थ से तत्व के साथ योग लगाते हैं और समझते हैं हम लीन हो जायेंगे। दुनिया में अनेक मत हैं, बाबा आकर एक मत बनाते हैं। समझाते हैं यह ड्रामा अनादि बना हुआ है, बहुत ही सुन्दर नाटक बना हुआ है। ड्रामा में दु:ख सुख का पार्ट नूँधा हुआ है, जिसे देख बहुत खुशी होती है। यह बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है। सो तो सबको पसन्द ही आना चाहिए। दिन भी अच्छा तो रात भी अच्छी। खेल है ना। जानते हैं अब रात पूरी होनी है। हमको दिन में जाकर ऊंच पद पाना है। नाराज़ क्या होंगे, ड्रामा में जो पार्ट मिला है, वह तो बजाना ही है। बहुत अच्छा ड्रामा है, इसको खराब कह नहीं सकते। यह खेल कब बन्द होता ही नहीं है, बहुत फर्स्टक्लास खेल है। इनको जानने से बुद्धि भरपूर हो गई है। जैसे बाप नॉलेजफुल है वैसे बच्चे भी नॉलेजफुल हैं। कितना समय सुख, कितना समय दु:ख पाना है, यह भी तुम सब कुछ जान गये हो तब तो कहते हैं वाह प्रभु तेरी लीला। प्रभु की रचना जरूर अच्छी ही होगी। उसको खराब कौन कहेगा। ड्रामा में जो पार्ट मिला हुआ है वो तो बजाना ही है। यह खेल कभी बन्द होना ही नहीं है, इनको जानने से मजा ही मजा आता है। भक्ति में सतयुगी राजाई का पता

के सब धर्म छोड़ो। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम मेरे पास चले आयेंगे। पहले-पहले यह निश्चय करो फिर दूसरी बात, तब तक आगे बढ़ना ही नहीं है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस यह है सबसे फर्स्टक्लास बात। सिर्फ दो अक्षर हैं अल्फ और बे, बाप और वर्सा। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अपना सब कुछ अल्फ के हवाले कर बे बादशाही लेनी है। पोतामेल रखना है कि बाप और वर्से की कितना समय याद रही।

२- कोई भी उल्टी चलन नहीं चलनी है। स्थाई याद में रहने का अभ्यास करना है।

वरदान:- विनाश के पहले एवररेडी रहने वाले समान और सम्पन्न भव

विनाश के पहले एवररेडी बनना ही सेफ्टी का साधन है। अगर समय मिलता है तो संगमयुग की मौज मनाओ लेकिन रहो एवररेडी क्योंकि फाइनल विनाश की डेट कभी भी पहले मालूम नहीं पड़ेगी, अचानक होना है। एवररेडी नहीं होंगे तो धोखा हो जायेगा इसलिए एवररेडी रहो। सदा याद रखो कि हम और बाप सदा साथ हैं। जैसे बाप सम्पन्न है वैसे साथ रहने वाले भी समान और सम्पन्न हो जायेंगे। समान बनने वाले ही साथ चलेंगे।

स्लोगन:-

जिनका स्वभाव निर्मल है उनके हर कदम में सफलता समाई हुई है।

"मीठे बच्चे - बाप की याद में रहना - यह बहुत मीठी मिठाई है, जो दूसरों को भी बांटते रहो अर्थात् अल्फ और बे का परिचय देते रहो"

प्रश्न:- स्थाई याद में रहने की सहज विधि क्या है?

उत्तर:- स्थाई याद में रहना है तो देह सहित जो भी सम्बन्ध हैं उन सबको भूलो। चलते-फिरते, उठते बैठते याद में रहने का अभ्यास करो। अगर योग में बैठते लालबत्ती भी याद आई तो योग टूट जायेगा। स्थाई याद रह नहीं सकेगी। जो कहते कोई खास बैठकर योग कराये, उनका योग भी लग नहीं सकता।

गीत:- रात के राही...

ओम् शान्ति। अभी यह हुई योग की बात क्योंकि अभी है रात। रात कहा जाता है कलियुग को, दिन कहा जाता है सतयुग को। तुम अभी कलियुग रूपी रात से सतयुगी दिन में जाते हो इसलिए रात को भूल दिन को याद करो। नर्क से बुद्धि को हटाना है। बुद्धि कहती है बरोबर यह नर्क है और किसी की बुद्धि नहीं कहती। बुद्धि है आत्मा में। आत्मा अब जान गई है कि बाबा आया है रात से दिन में ले जाने। बाप कहते हैं हे आत्मायें तुमको जाना है स्वर्ग में। परन्तु पहले शान्तिधाम में जाकर फिर स्वर्ग में आना है। गोया तुम योगी हो, पहले घर के, पीछे राजधानी के। अब मृत्युलोक अर्थात् रात पूरी होनी है। अब जाना है दिन में इसको ईश्वरीय योग कहा जाता है। ईश्वर निराकार हमको योग सिखलाते हैं अथवा हम आत्माओं की सगाई कराते हैं। यह है रूहानी योग, वह है जिस्मानी। तुम बच्चों को एक जगह बैठ योग नहीं लगाना है। वह तो मनुष्य जैसे खुद बैठते हैं वैसे सबको बैठक सिखाते हैं। यहाँ तुमको बैठक नहीं सिखाई जाती है। हाँ सभा में कायदेसिर बैठना है। बाकी योग में तो कैसे भी बैठें, चलते फिरते सोते भी लग सकता है। आर्टिस्ट योग में रह चित्र बना सकते हैं। शिवबाबा, जिनसे योग लगाते हैं, उनका चित्र बनाते हैं। जानते हैं यह हमारा बाबा निराकारी दुनिया परमधाम में रहते हैं। हम भी वहाँ के रहवासी हैं। हम आत्माओं को जाना है, यह बुद्धि में चलते-फिरते रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि मुझे तपस्या में बिठाओ, योग कराओ - यह कहना भी रांग है। बुद्धू ऐसे कहेंगे। बच्चे लौकिक बाप को खास बैठकर याद करते हैं क्या? बाबा-बाबा करते ही रहते हैं, कभी भूलते हीं नहीं हैं। छोटे बच्चे और ही जास्ती याद करते हैं। मुख चलता ही रहता है। यहाँ पारलौकिक बाप क्यों भूल जाता है? बुद्धियोग क्यों टूट पड़ता है? मुख से बाबा-बाबा कहना भी नहीं है। आत्मा जानती है बाबा को याद करना है। अगर खास बैठने क़ी आदत है तो योग सिद्ध न हो सके। यह ईश्वरीय योग तुमको स्वयं ईश्वर सिखला रहे हैं। योगेश्वर कहते हो ना। तुमको ईश्वर ने योग सिखाया है कि मुझ बाप को याद करो। ऐसे नहीं जब मुझे दीदी योग में बैठाती है तो मजा आता है। उनका योग कब स्थाई नहीं रह सकेगा। समझो हार्टफिल की तकलीफ हो जाती है तो उस समय कोई योग में बिठायेगा क्या? यह तो बुद्धि से याद करना है।

मनुष्य जो भी योग सिखलाते हैं वह है रांग। योगी कोई भी इस दुनिया में है नहीं। यूँ तो किसको भी याद करो तो वह भी योग हुआ। आम अच्छा लगता है तो उनसे योग लग जाता है, लालबत्ती अच्छी लगती है तो वह याद आयेगी तो उनसे भी योग हुआ। परन्तु यहाँ तो देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं उन सबको भूल मुझ एक के साथ योग लगाओ तब तुम्हारा कल्याण होगा और तुम विकर्माजीत बन जायेंगे। बाप ही आकर सद्गति का रास्ता बताते हैं। बाप के बिगर कोई भी सद्गति दे न सके। बाकी सब हैं दुर्गति का रास्ता बताने वाले। स्वर्ग कहा जाता है सद्गति को और मुक्तिधाम, जहाँ हम आत्मायें रहती हैं वह है घर। इस समय सभी को दुर्गति में पहुँचाने वाली है - मनुष्य मत। निराकार बाप आकर सद्गति देते हैं फिर आधाकल्प हम सद्गति में रहते हैं। वहाँ भगवान से मिलने वा मुक्ति जीवनमुक्ति पाने लिए दर-दर भटकते नहीं हैं। जब रावण राज्य शुरू होता है तब दर-दर ढूँढना शुरू करते हैं क्योंकि हम गिरने लग पड़ते हैं। भक्ति को भी शुरू होना ही है। तुम जानते हो अभी हम शरीर को छोड़ फिर शिवालय में जायेंगे। सतयुग है बेहद का शिवालय। इस समय है वैश्यालय। यह बातें याद करनी पड़ती हैं। शिवबाबा को याद नहीं करेंगे तो वो योगी नहीं, भोगी ठहरा। तुम किसको सुनने के लिए कहते हो तो कहते हैं हम दो वचन सुनेंगे। अब दो वचन तो बहुत नामीग्रामी हैं। मनमनाभव, मध्याजीभव। मुझे याद करो और वर्से को याद करो। इन दो वचनों से ही जीवनमुक्ति मिलती है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो निरोगी बनेंगे और चक्र को याद करेंगे तो धनवान बनेंगे। दो वचन से तुम एवरहेल्दी और एवरवेल्दी बन जाते हो। अगर राइट बात है तो उस पर चलना पड़े, नहीं तो समझते हैं बुद्धू है। अल्फ और बे - यह हैं दो वचन। अल्फ अल्लाह, बे हुई रचना। बाबा है अल्फ, बे है बादशाही। तुम्हारे में कोई को बादशाही मिलती है और कोई प्रजा में जाते हैं। तुम बच्चों को पोतामेल रखना चाहिए कि सारे दिन में कितना समय बाप को और वर्से को याद किया। यह श्रीमत बाप ही देते हैं। आत्माओं को बाप सिखलाते हैं। मनुष्य धन के लिए कितना माथा मारते हैं। धन तो ब्रह्मा के पास बहुत था। जब देखा कि अल्फ से बादशाही मिलती है तो धन क्या करेंगे? क्यों न सब कुछ अल्फ के हवाले कर बादशाही लेंवे। बाबा ने इस पर एक गीत भी बनाया... अल्फ को अल्लाह मिला... बे को मिली बादशाही... उसी समय बुद्धि में आया हमको तो विष्णु चतुर्भुज बनना है, हम इस धन को क्या करेंगे। बस बाबा ने बुद्धि का ताला खोल दिया। यह (साकार) बाबा तो धन कमाने में बिजी था, जब राजाई मिलती है तो गदाई का काम क्यों करें। फिर बाबा भूख तो नहीं मरा। बाबा के पास जो आते हैं - उनकी बहुत अच्छी पालना होती है। घर में भूख मरते होंगे। यहाँ तो जो श्रीमत पर चलते हैं उनको बाबा भी बहुत अच्छी मदद करते हैं। बाबा कहते हैं सबको रास्ता बताओ कि बेहद के बाप को याद करो और चक्र की नॉलेज को याद करो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। खिवैया आया है बेड़ा पार करने। तब तो गाते हैं पतित-पावन, खिवैया परन्तु याद किसको करना है, यह किसको भी मालूम नहीं है क्योंकि सर्वव्यापी कह दिया है। एक ही शिव के चित्र को कहते हैं भगवान। फिर लक्ष्मी-नारायण या ब्रह्मा विष्णु शंकर को भगवान क्यों कहते हैं। अगर सब ही

बाप बन जायें तो वर्सा कौन देगा। सर्वव्यापी कहने से तो न देने वाला रहा, न लेने वाला रहा। लिखा हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ऊपर में शिव खड़ा है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा देवता बनाते हैं तो ब्रह्मा भी देवता बनेंगे। यह काम एक बाप का ही है। उनकी ही महिमा है, एको ओंकार... अकालमूर्त, आत्मा अकालमूर्त होती है। उनको काल नहीं खाते, तो बाप भी अकालमूर्त है। शरीर तो सबके खत्म हो जाते हैं। आत्मा को कभी काल खाता नहीं है। वहाँ अकाले मृत्यु कब होता नहीं है। समझते हैं हमको एक शरीर छोड़ दूसरा लेना है। स्वर्ग में है तो जरूर पुनर्जन्म भी स्वर्ग में ही होगा। यहाँ तो सब नर्कवासी हैं। कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा, तो जरूर पहले नर्क में था। इतनी सहज बात भी समझते नहीं हैं। सन्यासी भी नहीं जानते हैं। वो तो ज्योति ज्योत समाया कह देते हैं। भारतवासी भगत भगवान को याद करते हैं। गृहस्थी भगत हैं क्योंकि भक्ति प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए होती हैं। वह तो हैं तत्व ज्ञानी। समझते हैं हम तत्व से योग लगाकर लीन हो जायेंगे। वह तो आत्मा को भी विनाशी मानते हैं। सत्य कब बोल नहीं सकते। सत्य है एक परमात्मा। तुमको अभी सत्य का संग है तो बाकी सब झूठ हुए। कलियुग में सत बोलने वाला कोई मनुष्य होता ही नहीं। रचयिता और रचना के बारे में कोई भी सत नहीं बोलता। बाप कहते हैं अभी मैं तुमको सभी शास्त्रों का सार बतलाता हूँ। मुख्य जो गीता है उनमें भी परमात्मा के बदले मनुष्य का नाम डाल दिया है, जबकि कृष्ण इस समय सांवरा है। अब कृष्ण का भी ऐसा चित्र बनायें जो मनुष्य समझें। डबल शेड देवें। एक तरफ सांवरे का शेड, दूसरे तरफ गोरे का शेड फिर उन पर समझाया जाए कि काम चिता पर बैठने से काला बन जाते हैं। फिर ज्ञान चिता पर बैठने से गोरा बन जाते हैं। निवृत्ति और प्रवृत्ति दोनों ही मार्ग दिखाना है। आइरन एज फिर गोल्डन एज बनती है। गोल्डन के बाद फिर सिल्वर, कॉपर होती है। आत्मा कहती है पहले मैं काम चिता पर थी, अब मैं ज्ञान चिता पर बैठी हूँ। अब तुम बच्चे जानते हो हम पतित से परिस्तानी बन रहे हैं। योग में रह तुम कोई भी चीज़ बनाओ तो कभी खराब नहीं होगी। बुद्धि ठीक रहने से मदद मिलती है। लेकिन है मुश्किल। बाबा कहते हैं हम भी भूल जाते हैं। बहुत तिरकनबाज़ी (फिसलने वाली) है। बड़ा अच्छा अभ्यास चाहिए। स्थाई याद ठहर नहीं सकती है। चलते फिरते याद में रहने का अभ्यास करना है। लेट्रिन में भी याद कर सकते हो। याद से बल मिलता है। इस समय सच्चा योग कोई भी जानते ही नहीं है। बाप के सिवाए जो भी योग लगाना सिखलाते हैं, वह रांग है। भगवान ने जब योग सिखलाया तो स्वर्ग बन गया। मनुष्यों ने जब योग सिखलाया तो स्वर्ग से नर्क बन गया। कोई भी उल्टी चलन थोड़ी चलते हैं तो बुद्धि का ताला बन्द हो जाता है। 10-15 मिनट भी याद में नहीं रह सकते। नहीं तो बुढ़ियों के लिए, बच्चों के लिए, बीमारों के लिए भी बहुत सहज है। बहुत अच्छी मिठाई है। भल गूँगा बहेरा हो, वह भी इशारों से समझ सकते हैं। बाप को याद करो तो यह वर्सा मिलेगा। कोई भी आये तो बोलो हम आपको रास्ता बताते हैं। बेहद के बाप स्वर्ग के रचयिता से स्वर्ग के सदा सुख का वर्सा कैसे मिलता है। यह छोटी-छोटी चिटकियां पर्चे बांटते रहना चाहिए। दिल में बहुत उमंग रहना चाहिए। कोई भी धर्म वाला आये तो हम ऐसे समझायें। बाप कहते हैं यह देह

गालियाँ देते हो। अब मैं अपकारी पर भी उपकार करता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा रावण मत पर यह हाल हुआ है। जो सेकेण्ड पास हुआ वह ड्रामा। परन्तु आगे के लिए खबरदार रहना कि हमारा खाता खराब न हो। हर एक को अपनी प्रजा भी बनानी है, वारिस भी बनाना है। मुरली कोई मिस नहीं करनी चाहिए। कोई प्वाइंट्स मिस न हो जाएं। अच्छे-अच्छे ज्ञान रत्न निकल जायें और सुनें नहीं तो धारणा कैसे करेंगे। रेग्युलर स्टूडेन्ट मुरली कभी मिस नहीं करेंगे। कोशिश कर रोज़ वाणी पढ़नी चाहिए। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अपना खाता खराब न हो, इसके लिए बहुत खबरदार रहना है। कभी कुल कलंकित नहीं बनना है। पढ़ाई रोज़ पढ़नी है, मिस नहीं करनी है।

२- श्रवणकुमार-कुमारी बन ज्ञान कवांठी (कांवर) पर सबको बिठाना है। मित्र-सम्बन्धियों को भी ज्ञान दे उनका कल्याण करना है।

वरदान:- सच्चे वैष्णव बन पवित्रता की श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव करने वाले सम्पूर्ण पवित्र भव

सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा बहुत श्रेष्ठ और सहज है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ है स्वप्न-मात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे–इसी को कहा जाता है सच्चे वैष्णव। चाहे अभी नम्बरवार पुरूषार्थी हो लेकिन पुरूषार्थ का लक्ष्य सम्पूर्ण पवित्रता है और यह सहज भी है क्योंकि असम्भव से सम्भव करने वाले सर्वशक्तिमान् बाप का साथ है।

स्लोगन:-

सहजयोगी वह है जो हठ वा मेहनत करने के बजाए रमणीकता से पुरूषार्थ करे।

"मीठे बच्चे – बाबा आया है तुम बच्चों से दान लेने, तुम्हारे पास जो भी पुराना किचड़ा है, उसे दान दे दो तो पुण्य आत्मा बन जायेंगे"

प्रश्न:- पुण्य की दुनिया में चलने वाले बच्चों प्रति बाप की श्रीमत क्या है?

उत्तर:- मीठे बच्चे – पुण्य की दुनिया में चलना है तो सबसे ममत्व मिटाओ। 5 विकारों को छोड़ो। इस अन्तिम जन्म में ज्ञान चिता पर बैठो। पवित्र बनो तो पुण्य आत्मा बन पुण्य की दुनिया में चले जायेंगे। ज्ञान-योग को धारण कर अपनी दैवी चलन बनाओ। बाप से सच्चा सौदा करो। बाप तुम्हारे से लेते कुछ नहीं, सिर्फ ममत्व मिट जाये, उसकी युक्ति बताते हैं। बुद्धि से सब बाप हवाले कर दो।

गीत:- इस पाप की दुनिया से.....

ओम् शान्ति। दुनिया के मनुष्य वा रावणराज्य के मनुष्य पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ, पावन दुनिया अथवा पुण्य की दुनिया में ले चलो। गीत बनाने वालों को इन बातों की समझ नहीं है। पुकारते हैं – रावणराज्य से रामराज्य में ले चलो, परन्तु अपने को कोई पतित समझते नहीं हैं। अपने बच्चों के पास तो सम्मुख बाप बैठे हैं। रामराज्य में ले चलने के लिए, श्रेष्ठ बनने के लिए श्रीमत दे रहे हैं। भगवानुवाच – राम भगवानुवाच नहीं। सीता के पति को भगवान नहीं कहेंगे। भगवान निराकार है। निराकारी, आकारी, साकारी तीन दुनियायें हैं ना। निराकार परमात्मा निराकारी बच्चों (आत्माओं) के साथ निराकारी दुनिया में रहने वाले हैं। अभी बाबा आया हुआ है - स्वर्ग का राज्य भाग्य देने, हमको पुण्य आत्मा बनाने। रामराज्य माना दिन, रावण राज्य माना रात। यह बातें और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी कोई विरला जानते है। इस ज्ञान के लिए भी पवित्र बुद्धि चाहिए। मूल बात है याद की। अच्छी चीज़ हमेशा याद रहती है। तुमको पुण्य क्या करना है? तुम्हारे पास जो किचड़ा है वह मेरे हवाले कर दो। मनुष्य जब मरते हैं तो उसके बिस्तर कपड़े आदि सब करनीघोर को देते हैं। वह दूसरे किसम के ब्राह्मण होते हैं। अब बाबा आया है, तुम्हारे से दान लेने के लिए। यह पुरानी दुनिया, पुराना शरीर सब कुछ सड़ा हुआ है। यह मुझे दे दो और इससे ममत्व मिटाओ। भल 10-20 करोड़ हैं। परन्तु बाप कहते हैं इनसे बुद्धि निकालो। बदले में तुमको सब कुछ नई दुनिया में मिलेगा, कितना यह सस्ता सौदा है। बाप कहते हैं जिनमें मैंने प्रवेश किया है, उसने सब सौदा किया। अब देखो - उसके बदले कितना राज्य-भाग्य मिलता है। कुमारियों को तो कुछ देना ही नहीं है। वर्सा मिलता है बच्चों को तो उनको मिलकियत का नशा रहता है। आजकल स्त्री को हाफ पार्टनर थोड़ेही बनाते हैं, सारा बच्चों को ही देते हैं। पुरुष मर जाता है तो स्त्री को कोई पूछता

भी नहीं। यहाँ तो तुम बाप से फुल वर्सा लेते हो। यहाँ तो कोई मेल फीमेल का सवाल ही नहीं। सब वर्से के अधिकारी हैं। माताओं, कन्याओं को तो और ही हक जास्ती मिलता है क्योंकि कन्याओं का लौकिक बाप के वर्से में ममत्व नहीं है। वास्तव में तुम सब कुमार कुमारियाँ हो गये। बाप से कितना वर्सा पाया है। एक कहानी है – राजा ने बच्चियों से पूछा – किसका खाती हो? तो एक ने कहाँ अपने भाग्य का। तो राजा ने उसको निकाल दिया। वह बाप से भी साहूकार हो गई, बाप को निमन्त्रण दिया, पूछा अब किसका खाती हूँ, देखो। तो बाप भी कहते हैं बच्चे, तुम सब अपनी तकदीर बनाते हो।

देहली में एक ग्राउण्ड है, नाम रखा है रामलीला ग्राउण्ड। वास्तव में नाम रखना चाहिए रावण लीला क्योंकि इस समय सारे विश्व में रावण लीला चल रही है। बच्चों को रामलीला ग्राउण्ड लेकर – उसमें चित्र लगाने चाहिए। एक तरफ राम का चित्र हो और नीचे बड़ा रावण का भी चित्र हो। बहुत बड़ा गोला हो। बीच में लिख देना चाहिए – यह राम राज्य, यह रावण राज्य। तो समझ जायें। देवताओं की देखो कितनी महिमा है – सर्वगुण सम्पन्न....। आधाकल्प है कलियुगी भ्रष्टाचारी, रावणराज्य... उसमें सभी आ जाते हैं। अब रावण राज्य का अन्त तो राम ही करेंगे। इस समय रामलीला है नहीं, सारी दुनिया में रावण लीला है। रामलीला होती है सतयुग में। लेकिन सभी अपने को बड़ा अक्लमंद समझते हैं। श्री श्री का टाइटिल रखाते हैं – यह टाइटिल तो है निराकार परमपिता परमात्मा का, जिस द्वारा श्री लक्ष्मी-नारायण भी राज्य पाते हैं। अब बाबा आया है, तुमको भक्ति रूपी अंधकार से छुड़ाकर सोझरे में ले जाते हैं। जिनमें ज्ञान-योग होगा उनकी चलन भी दैवी होगी। आसुरी चलन वाले किसका भी कल्याण नहीं कर सकते। झट मालूम पड़ जाता है इसमें आसुरी अवगुण हैं या दैवीगुण! अभी तक कोई सम्पूर्ण तो है नहीं। अभी बनते जाते हैं। बाबा तो दाता है, तुमसे क्या लेंगे। जो कुछ लेते हैं वह तुम्हारी सेवा में लगा देते हैं। बाबा ने इनको भी सरेन्डर कराया – भट्ठी बनानी है, बच्चों की पालना करनी है। पैसे बिगर इतनों की पालना कैसे होगी। पहले बाबा ने इनको अर्पण कराया फिर जो आये उनको भी अर्पण करवाया। परन्तु सभी की एकरस अवस्था तो बनी नहीं, बहुत चले भी गये। (बिल्ली के पूंगरों की कहानी) नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सब पक कर निकले। बाबा तो पुण्य की दुनिया में ले चलते हैं। सिर्फ कहते हैं 5 विकारों को छोड़ो। हम तुमको प्रिन्स-प्रिन्सेज बनायेंगे। ब्रह्मा का साक्षात्कार घर बैठे बहुतों को हो जाता है। वहाँ से लिखकर भेज देते हैं – बाबा हम आपके बन गये हैं, हमारा सब कुछ आपका है। बाबा कुछ लेते नहीं। बाबा कहते हैं सब कुछ अपने पास रखो। यहाँ मकान बनाते हैं, कोई पूछते हैं पैसा कहाँ से लाया। अरे इतने ढेर बच्चे हैं, बाबा को। प्रजापिता ब्रह्मा का नाम सुना है ना। कहते हैं सिर्फ ममत्व मिटाओ, तुम्हें वापिस जाना है। बाबा को याद करो। हमको भगवान

पढ़ाते हैं तो खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। लक्ष्मी-नारायण को भगवान नहीं कहेंगे, देवी-देवता कहेंगे। भगवान के पास भगवती होती नहीं। कितनी युक्ति की बात है। सिवाए सम्मुख यह बातें कोई समझ न सके। गाते भी हैं त्वमेव माताश्च पिता... ज्ञान न होने के कारण लक्ष्मी-नारायण के आगे, हनूमान के आगे, गणेश के आगे भी जाकर यह महिमा गाते हैं। अरे वह तो साकारी थे, उनको अपने बच्चे ही मात-पिता कहेंगे। तुम उनके बच्चे हो कहाँ? तुम तो रावण के राज्य में हो। यह ब्रह्मा भी माता है। इन द्वारा बाबा कहते हैं तुम मेरे बच्चे हो। परन्तु माताओं, कन्याओं को सम्भालने वाली माता चाहिए। एडाप्टेड बच्ची है - बी.के.सरस्वती। कितनी गुह्य बातें हैं। बाबा जो ज्ञान देते हैं वह कोई भी शास्त्रों में नहीं है। भारत का एक मुख्य शास्त्र है गीता, उसमें ज्ञान के पढ़ाई की बातें हैं। उसमें चरित्र की कोई बात नहीं। ज्ञान से मर्तबा मिलता है।

बाबा जादूगर है। तुम गाते हो रत्नागर, जादूगर... तुम्हारी झोली भरती है स्वर्ग के लिए। साक्षात्कार तो भक्ति मार्ग में भी करते हैं, परन्तु उनसे कुछ लाभ नहीं। लिखेंगे, पढेंगे... साक्षात्कार से तुम कोई वह बन गये क्या? साक्षात्कार मैं कराता हूँ। पत्थर की मूर्ति थोड़ेही साक्षात्कार करायेगी। नौंधा भक्ति में भावना तो शुद्ध रखते हैं। उनका उजूरा मैं देता हूँ, परन्तु तमोप्रधान तो बनना ही है। मीरा ने साक्षात्कार किया परन्तु ज्ञान तो कुछ भी नहीं था। मनुष्य तो दिन प्रतिदिन तमोप्रधान होते जायेंगे। अभी तो सभी मनुष्य पतित हैं। गाते भी हैं हमें ऐसी जगह ले चलो, जहाँ सुख चैन पायें।

तुम भारतवासियों को सतयुग में बहुत सुख था। सतयुग का नाम बाला है ना। स्वर्ग भारत में ही था – परन्तु समझते नहीं हैं। यह भी जानते हैं भारत ही प्राचीन था, स्वर्ग था। वहाँ कोई और धर्म नहीं था। यह सब बातें बाप ही समझाते हैं। तुम सभी अब श्रवण कुमार और कुमारियाँ बनते हो। तुम सबको ज्ञान की कवांठी (कांवर) पर बिठाते हो। तुमको सब मित्र-सम्बन्धियों को ज्ञान दे उठाना है। बाबा के पास युगल भी आते हैं। आगे तो जिस्मानी ब्राह्मण से हथियाला बंधवाते थे। अभी तुम रूहानी ब्राह्मण काम चिता का हथियाला तोड़ते हो। बाबा के पास आते हैं तो बाबा पूछते हैं – स्वर्ग में चलेंगे। कोई कहते हैं हमको स्वर्ग यहाँ ही है। अरे यह अल्पकाल का स्वर्ग है। मैं तुमको 21 जन्म के लिए स्वर्ग दूँगा, परन्तु पहले पवित्र रहना पड़ेगा। बस, इस ही बात में ढीले पड़ जाते हैं। अरे बेहद का बाप कहते हैं – तो यह अन्तिम जन्म ज्ञान चिता पर बैठो। तो देखा जाता है स्त्रियाँ झट आ जाती हैं। कोई फिर कहती हैं पति परमेश्वर को नाराज़ कैसे करें।

बाबा के बने तो कदम-कदम पर श्रीमत पर चलना पड़े। अब बाबा आया है, स्वर्ग का मालिक बनाने। पवित्र बनना अच्छा है। कुल कलंकित मत बनो। बाप कहेंगे ना! लौकिक बाप तो चमाट भी मारेंगे। मम्मा मीठी होती है। बहुत मीठा रहमदिल बनना है। बाप कहते हैं बच्चे, तुम मुझे बहुत

बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते यह अन्तिम जन्म पवित्र रहना है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- शुद्ध भोजन खाते हुए भी आत्मा को पावन बनाने के लिए याद की मेहनत जरूर करनी है। याद से ही श्रेष्टाचारी बनना है। विकर्म विनाश करने हैं।

२- इस कयामत के समय में जबकि घर वापिस जाना है तो पुराना सब हिसाब-किताब चुक्तू कर देना है। आपस में ज्ञान की चर्चा करनी है। मायावी बातें नहीं करनी है।

वरदान:- कम्पेनियन को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करने वाले स्मृति स्वरूप भव

कई बच्चों ने बाप को अपना कम्पैनियन तो बनाया है लेकिन कम्पैनियन को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करो, अलग हो ही नहीं सकते, किसकी ताकत नहीं जो मुझ कम्बाइन्ड रूप को अलग कर सके, ऐसा अनुभव बार-बार स्मृति में लाते-लाते स्मृति स्वरूप बन जायेंगे। जितना कम्बाइन्ड रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक अनुभव होगी।

स्लोगन:-

दृढ़ संकल्प की बेल्ट बांधी हुई हो तो सीट से अपसेट नहीं हो सकते।

"मीठे बच्चे – बाप को याद करने की आदत डालो तो देही–अभिमानी बन जायेंगे, नशा वा खुशी कायम रहेगी, चलन सुधरती जायेगी"

प्रश्न:- ज्ञान अमृत पीते हुए भी कई बच्चे ट्रेटर बन जाते हैं - कैसे?

उत्तर:- जो एक ओर ज्ञान अमृत पीते दूसरी ओर जाकर गंद करते अर्थात् आसुरी चलन चल डिससर्विस करते, ईश्वर के बच्चे बनकर अपनी चलन सुधारते नहीं, आपस में मायावी बातें करते, एक दो को दु:खी करते, वह हैं ट्रेटर। बाबा कहते बच्चे, तुम यहाँ आये हो असुर से देवता बनने, तो सदा एक दो में ज्ञान की चर्चा करो, दैवीगुण धारण करो, अन्दर जो भी अवगुण हैं उन्हें निकाल दो। बुद्धि को स्वच्छ, साफ बनाओ।

गीत:- तकदीर जगाकर आई हूँ....

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना और बच्चों ने ही गाया। कोई भी स्कूल में जब जाते हैं तो तकदीर बुद्धि में रहती है कि यह इम्तहान पास करूँगा। बुद्धि में तकदीर की एम ऑब्जेक्ट रहती है। अब तुम बच्चे जानते हो हम अपनी तकदीर में नई दुनिया को धारण कर बैठे हैं। नई दुनिया को रचने वाले परमपिता परमात्मा से हम वर्सा लेने की तकदीर ले आये हैं। कौन सा वर्सा? मनुष्य से देवता वा नर से नारायण बनने का वर्सा। यह है रावण का भ्रष्टाचारी राज्य, भ्रष्टाचारी विकार से पैदा होते हैं और विकारी को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। भगवानुवाच, काम महाशत्रु है, तुमको इन पर जीत पानी है, तब ही श्रेष्टाचारी बनेंगे। भारत ही भ्रष्टाचारी, भारत ही श्रेष्टाचारी बनेगा। भूत पलीती को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। सतयुग में भ्रष्टाचारी होते ही नहीं क्योंकि वहाँ माया का राज्य ही नहीं है। इस समय है ही रावण राज्य। सबमें 5 विकार हैं। सतयुग में भी अगर रावणराज्य होता तो वहाँ भी रावण को जलाते। वहाँ यह बातें होती नहीं। वहाँ हैं श्रेष्ठाचारी। भ्रष्टाचारी दुनिया में कोई ऊंच पोजीशन पर है तो सब उनको मानते हैं। जैसे सन्यासी बहुत अच्छी पोजीशन पर हैं तो सब उनको मानते हैं, क्योंकि वे पवित्र रहते हैं तब ही सब मनुष्य उनको अच्छा समझते हैं। गवर्नमेन्ट भी अपने से अच्छा समझती है। उन्हों को अपना राज़-गुरू भी बनाती है। सतयुग में तो गुरू का नाम होता ही नहीं। गुरू अर्थात् सद्गति करने वाले। शास्त्रों में तो कहानियाँ बना दी हैं। राजा जनक ने उन्हें जेल में डाल दिया जिनमें ब्रह्म ज्ञान, राजयोग का ज्ञान नहीं था। जब उन्हें राजयोग का ज्ञान मिला तब सेकेण्ड में जीवनमुक्ति को पाया। भ्रष्टाचारी का सिर्फ यह अर्थ नहीं है कि रिश्वत आदि खाते हैं। नहीं, बाप कहते हैं जो भी मनुष्य मात्र हैं सब भ्रष्टाचारी हैं क्योंकि सबके शरीर विकार से पैदा होते हैं। तुम्हारा शरीर भी विकार से पैदा हुआ है। परन्तु अभी तुम अपने को आत्मा समझ बाप के बने हो, देह-अभिमान छोड़ दिया है इसलिए तुम परमपिता परमात्मा की मुख वंशावली हो, ईश्वरीय सन्तान हो। परमपिता परमात्मा ने आकर तुम आत्माओं को अपना बनाया है। यह बहुत गुह्य बातें हैं। हम आत्मा परमपिता परमात्मा की वंशावली बने हैं। आत्मा कहती है - बाबा। सतयुग

में आत्मा कोई परमात्मा को बाबा नहीं कहेगी। वहाँ तो जीव आत्मा, जीव आत्मा को बाबा कहेगी। तुम जीव आत्मा हो। अब बाबा ने कहा है अपने को आत्मा निश्चय कर परमात्मा को याद करो। सबसे उत्तम जन्म तुम ब्राह्मणों का है। आत्मा कहती है हम आपके बच्चे बने हैं। गर्भ से थोड़ेही निकले हैं। बाबा को पहचान कर उनके बने हैं। शिवबाबा हम आपके ही हैं और आपकी ही मत पर चलेंगे। कितनी सूक्ष्म बातें हैं। बाबा ने कहा है, जब बाबा के पास जाते हो तो यह निश्चय करो कि हम शिवबाबा के सामने बैठे हैं। आत्मा भी निराकार है तो शिवबाबा भी निराकार है। शिवबाबा की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। याद नहीं किया तो भ्रष्टाचारी बनें। कितनी कड़ी बातें हैं, परन्तु बहुत बच्चों को यह भूल जाता है कि मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की गोद में बैठी हूँ। भूलने के कारण वह नशा और खुशी नहीं रहती है। बाबा को याद करने की आदत पड़ जाए तो देही-अभिमानी बन जावें। विलायत में बहुत बच्चियाँ हैं, सम्मुख नहीं हैं। परन्तु बाबा को याद करती हैं। बाबा को बहुत प्यार से याद करना है। जैसे सजनी साजन को कितना प्यार से याद करती है। चिट्ठी नहीं आती है तो सजनी बहुत हैरान हो जाती है। तुम सजनियों को तो धक्का खा-खा कर साजन मिला है तो याद अच्छी रहनी चाहिए। चलन भी बड़ी अच्छी चाहिए। आसुरी चलन वाले का गला ही घुट जाता है। बाबा चलन से ही समझ जाते हैं – यह याद नहीं करते हैं इसलिए धारणा नहीं होती है। सर्विस नहीं कर सकते हैं तो पद भी नहीं पा सकेंगे। पहले-पहले तो बाप का बनना है। बी.के. बनना पड़े। बी.के. को जरूर शिवबाबा ही याद रहेगा क्योंकि दादे से वर्सा लेना है। याद में रहना बड़ी मेहनत है। ऐसे कोई मत समझे भोग लगता है हम वह खाते हैं तो बुद्धियोग बाबा से लग जायेगा। नहीं, यह तो शुद्ध भोजन है। परन्तु वह मेहनत न करे तो कुछ भी नहीं हुआ। श्रेष्टाचारी याद से ही बनेंगे। पवित्रता फर्स्ट है। आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए योग का बल चाहिए, पानी में स्नान आदि करने से तो पावन बन नहीं सकते क्योंकि पतित आत्मा ही बनती है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे – जेवर झूठा है, सोना सच्चा है। वो लोग समझते हैं आत्मा शुद्ध है। जेवर (शरीर) झूठा है, उनको हम साफ करते हैं। परन्तु नहीं। आत्मा अगर शुद्ध होती तो शरीर भी शुद्ध होता। यहाँ एक भी श्रेष्ठ नहीं है। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। वह तो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं, चोला विकारी हो तो आत्मा फिर पवित्र कैसे हो सकती। सोना पवित्र है और जेवर झूठे बनें, यह कैसे हो सकता। यह अच्छी तरह समझाना है, इस समय कोई भी श्रेष्ठाचारी नहीं है। बाप को भी नहीं जानते हैं और पवित्र भी नहीं हैं।

तुम बच्चे जानते हो कि गरीब ही गुप्त पुरुषार्थ करके राज्य भाग्य लेते हैं बाकी तो सबका विनाश होना है। यह ज्ञान है भारत के लिए। बाबा कहते हैं मेरे भक्तों को यह ज्ञान सुनाओ। शिव के पुजारी हो या देवताओं के पुजारी हों। दूसरे धर्मों में भी बहुत कनवर्ट हो गये हैं। उनसे भी निकल आयेंगे। मूल बात है यहाँ की पवित्रता, तब तो अपवित्र मनुष्य उन्हों को (सन्यासियों को) अपना गुरू बनाए माथा टेकते हैं। परमात्मा तो है एवर पवित्र। उनको सम्पूर्ण निर्विकारी भी नहीं कह सकते हैं। परमात्मा की महिमा अलग है। देवताओं की महिमा अलग गाई जाती है - सम्पूर्ण निर्विकारी

...। उनको फिर विकारी जरूर बनना है। यह बातें बुद्धि में धारण कर फिर औरों को भी समझाना है। यादव और कौरव... यथा राजा रानी तथा प्रजा सबने विनाश को पाया है। बाकी जयजयकार पाण्डव सेना की हुई। वह है गुप्त। शास्त्रों में तो दिखाया है – पाण्डव पहाड़ों पर गल गये। प्रलय का हिसाब निकाल दिया है, परन्तु प्रलय तो होती नहीं है। गीता का भगवान कहते हैं मैं धर्म की स्थापना करता हूँ। पतित दुनिया में आया हूँ पावन राज्य बनाने। राजयोग सिखाने आया हूँ। यह जो प्रदर्शनी होती है, उसमें राजयोग भी सिखाया जाता है। तुम्हारा सारा मदार है समझाने पर। बाबा ने कहा था यह चित्र बनाओ कि कैसे हम राजयोग में रहते हैं। ऊपर में शिवबाबा का चित्र हो। हम शिवबाबा की याद में बैठे हैं। उनकी मत पर चलते हैं। वह है श्री श्री रुद्र, जो हमको श्रेष्ठ बनाते हैं। श्री श्री का टाइटिल वास्तव में उनका ही है। यह भारत क्यों इतना गिरा है? एक तो ईश्वर को सर्वव्यापी समझ बैठे और अपने को ईश्वर मान बैठे।

तुम जानते हो सतगुरू तो एक ही बाप है। उनकी यह जन्म भूमि है। सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा बाप ही आकर सुनाए बेड़ा पार करते हैं। बाप कहते हैं – पतित-पावन तो तुम मुझे ही कहते हो ना। मुझे ही सबको वापिस ले जाना है। यह है कयामत का समय, जबकि हिसाब-किताब चुक्तू कर हम वापिस जाते हैं। सब कहते हैं नव भारत, नव देहली हो। अब नव भारत तो स्वर्ग ही था। अब तो नर्क है ना। भ्रष्टाचारी बनते जाते हैं। यह समझने और समझाने की बातें हैं। आत्मा और परमात्मा का रूप भी कोई नहीं जानते हैं। भल कहते हैं हम आत्मा, परमात्मा की सन्तान हैं परन्तु नॉलेज चाहिए ना। बाप में नॉलेज है। आत्मा में नॉलेज कहाँ है। हम आत्मा कितने पुनर्जन्म लेती हैं, कहाँ रहती हैं, फिर कैसे आती हैं, क्यों दु:खी बनती हैं..... कुछ भी समझ नहीं है। तुम बच्चे जानते हो बाबा हम आत्माओं को पवित्र बनाने आया है। तो वह दैवीगुण भी चाहिए। मैं देवता बन रहा हूँ, तो मेरे में कोई भी अवगुण नहीं होना चाहिए। नहीं तो सौ गुणा दण्ड खाना पड़ेगा। पवित्रता की प्रतिज्ञा करके फिर कोई बुरा कर्तव्य करते हैं तो 100 प्रतिशत अपवित्र भी बन पड़ते हैं। सर्विस के बदले और ही डिससर्विस करते हैं, इसलिए फिर पद भ्रष्ट हो जाता है। हमेशा आपस में एक दो में ज्ञान की चर्चा चलनी चाहिए। हम बाबा के पास आये हैं कांटे से फूल अथवा मनुष्य से देवता बनने, बाप से स्वर्ग का वर्सा लेने। यही बात एक दो को सुनानी चाहिए। आत्मा और परमात्मा का रूप भी कोई जानते ही नहीं। भल कहते हैं आत्मा परमात्मा की सन्तान है। परन्तु नॉलेज चाहिए, धारणा चाहिए, जो मायावी बातें करते हैं, किसको दु:खी करते हैं उनको ट्रेटर कहा जाता है। यह भी दिखाया है ना कि असुरों को ज्ञान अमृत पिलाया फिर वह बाहर जाकर गंद करते थे। ऐसे भी बहुत हैं जो ज्ञान अमृत पीते भी रहते हैं और डिस-सर्विस भी करते रहते हैं। वास्तव में तुम सब कन्याये हो, अरे अधर-कुमारी के तो मन्दिर बने हुए हैं। देलवाड़ा तो तुम्हारा एक्यूरेट यादगार है। तुम्हारे में भी किसकी बुद्धि में मुश्किल बैठता है। बुद्धि बड़ी साफ चाहिए। तुम अभी ईश्वरीय परिवार के हो। तो ख्याल करना चाहिए कि हमारी चलन कितनी अच्छी चाहिए। जो मनुष्य समझें कि इनको बरोबर श्रीमत मिलती है। यहाँ श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनें, तब वहाँ पद मिले। श्रेष्ठ यहाँ

करानी है। कोई ज्ञानी लड़का लेकर दो तो शादी करावें। बच्ची कहे हम शादी नहीं करेंगी। बहुत बच्चियां मार खाती हैं। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। बाबा लिखते हैं माँ बाप और बच्चे तीनों ही बाबा के पास आ जाओ तो बाबा समझायेंगे। आदरणीय पिताश्री लिखते हो तो आ जाओ। पैसा नहीं हो, टिकेट के लिए तो वह भी मिल सकते हैं। सम्मुख आने से श्रीमत मिलेगी। कुमारी का घात तो नहीं करना है ना। नहीं तो पाप आत्मा बन पड़ेंगे। बाप की श्रीमत पर चलकर पवित्र बनना पड़े। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- जीवनमुक्त पद पाने का पुरुषार्थ करना है। जैसे माँ बाप महाराजा महारानी बनते हैं, ऐसे फालो कर तख्तनशीन बनना है। सेन्सीबुल बन पढ़ाई अच्छी रीति पढ़नी है।

२- बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। रहमदिल बन अन्धों को रास्ता दिखाना है। बाप से श्रीमत ले पाप आत्मा बनने से बचना और बचाना है।

वरदान:- मास्टर दाता बन खुशियों का खजाना बांटने वाले सर्व की दुआओं के पात्र भव

वर्तमान समय सभी को अविनाशी खुशी की आवश्यकता है, सब खुशी के भिखारी हैं, आप दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चों का काम है देना। जो भी संबंध-सम्पर्क में आये उसे खुशी देते जाओ। कोई खाली न जाये, इतना भरपूर रहो। हर समय देखो कि मास्टर दाता बनकर कुछ दे रहा हूँ या सिर्फ अपने में ही खुश हूँ! जितना दूसरों को देंगे उतना सबकी दुआओं के पात्र बनेंगे और यह दुआयें सहज पुरूषार्थी बना देंगी।

स्लोगन:-

संगम की प्राप्तियों को याद रखो तो दु:ख व परेशानी की बातें याद नहीं आयेंगी।

"मीठे बच्चे - पुरानी देह और देह के सम्बन्धी जो एक दो को दु:ख देने वाले हैं, उन सबको भूल एक बाप को याद करो, श्रीमत पर चलो"

प्रश्न:- बाप के साथ-साथ वापिस चलने के लिए बाप की किस श्रीमत का पालन करना पड़े?

उत्तर:- बाप की श्रीमत है बच्चे पवित्र बनो, ज्ञान की पूरी धारणा कर अपनी कर्मातीत अवस्था बनाओ तब साथ-साथ वापिस चल सकेंगे। कर्मातीत नहीं बने तो बीच में रुक कर सजायें खानी पड़ेंगी। कयामत के समय कई आत्मायें शरीर छोड़ भटकती हैं, साथ में जाने के बजाए यहाँ ही पहले सज़ा भोग हिसाब चुक्तू करती हैं इसलिए बाप की श्रीमत है बच्चे सिर पर जो पापों का बोझा है, पुराने हिसाब-किताब हैं, सब योगबल से भस्म करो।

गीत:- ओ दूर के मुसाफिर....

ओम् शान्ति। अभी तुम ब्राह्मणों की बुद्धि से सर्वव्यापी का ज्ञान तो निकल गया है। यह तो अच्छी रीति समझाया जाता है कि परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई रचना रचते हैं। वह ठहरा रचयिता, जिसको परमात्मा कहा जाता है। यह भी बच्चे जानते हैं कि वह आते हैं, आकर बच्चों को अपना बनाते हैं। माया से लिबरेट करते हैं। पुरानी देह, देह सहित जो भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, जो एक दो को दु:ख देने वाले हैं, उनको भूलना है। जैसे कोई बूढ़ा होता है तो उनको मित्र-सम्बन्धी आदि कहते हैं राम जपो। अब वह भी झूठ ही बताते हैं। न खुद जानते हैं, न उनकी बुद्धि में परमात्मा की याद ठहरती है। समझते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। एक तरफ गाते हैं दूर के मुसाफिर.. आत्मायें दूर से आकर शरीर धारण कर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। यह सब बातें मनुष्यों के लिए ही समझाई जाती हैं। मनुष्य शिव का मन्दिर बनाते हैं। पूजा करते हैं। फिर भी यहाँ-वहाँ ढूंढते रहते हैं। कह देते हैं हमारे तुम्हारे सबमें व्यापक है। उनको आरफन कहते हैं - धनी को न जानने वाले। याद करते हैं हे भगवान, परन्तु जानते नहीं। हाथ जोड़ते हैं। समझते हैं वह निराकार है। हमारी आत्मा भी निराकार है। यह आत्मा का शरीर है। परन्तु आत्मा को कोई भी जानते नहीं। कहते भी हैं भ्रकुटी के बीच चमकता है अज़ब सितारा। अगर स्टार है तो फिर इतना बड़ा लिंग क्यों बनाते हैं! आत्मा में ही 84 जन्मों का पार्ट है। यह भी नहीं जानते हैं। इधर उधर ढूंढते धक्का खाते रहते हैं। सबको भगवान कहते हैं। बद्रीनाथ भी भगवान, कृष्ण भी भगवान, पत्थर-ठिक्कर में भी भगवान है तो फिर इतना दूर दूर ढूंढने क्यों जाते हैं। जो हमारे देवी-देवता धर्म वाला नहीं होगा वह न ब्राह्मण बनेगा, न उनको धारणा होगी। वह ऐसे ही अच्छा-अच्छा कहते रहेंगे। बाप कहते हैं बच्चे मैं तुमको साथ ले चलूंगा। जब तुम श्रीमत पर चल पहले पवित्र

बनेंगे, ज्ञान की धारणा करेंगे, अपनी कर्मातीत अवस्था बनायेंगे तब ही मेरे साथ-साथ घर पहुंचेंगे। नहीं तो बीच में रुक कर बहुत कड़ी सजा खानी पड़ेगी। मरने के बाद कई आत्मायें भटकती भी हैं। जब तक शरीर मिले तब तक भटकती हुई सजा भोगेंगी। यहाँ बहुत गन्दगी हो जायेगी - कयामत के समय। पापों का बोझा बहुत सिर पर है, सबको हिसाब-किताब तो चुक्तू करना ही है। कोई बच्चे तो अभी तक भी योग को समझते नहीं हैं। एक मिनट भी बाप को याद नहीं करते। तुम बच्चों को घड़ी-घड़ी कहा जाता है - बाबा को याद करो क्योंकि सिर पर बोझा बहुत है। मनुष्य कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। फिर भी तीर्थ यात्रा की तरफ कितना भटकते हैं। समझते हैं यह सब कर्मकान्ड आदि करने से हमको परमात्मा से मिलने का रास्ता मिलेगा। बाप कहते हैं पतित भ्रष्टाचारी तो मेरे पास पहुंच भी नहीं सकते। कहते हैं फलाना पार निर्वाण गया, परन्तु यह गपोड़े मारते हैं। जाता कोई भी नहीं है। अभी तुम जानते हो - भक्ति मार्ग में कितने धक्के खाते हैं। यह सब शास्त्र आदि पढ़ते-पढ़ते मनुष्यों को गिरना ही है। बाप चढ़ाते हैं, रावण गिराते हैं। अब बाप समझाते हैं तुम मेरी मत पर चल पवित्र बनेंगे और अच्छी तरह पढ़ेंगे तो स्वर्ग में चलेंगे, नहीं तो इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। प्रदर्शनी की कितनी सर्विस चलती है। अब यह सर्विस बढ़ती जायेगी। गांव-गांव में जायेंगे। यह है नई इन्वेन्शन। नई-नई प्वाइंट्स निकलती रहती हैं। जब तक जीना है तब तक सीखना ही है। तुम्हारी एम आब्जेक्ट है ही भविष्य के लिए। यह शरीर छोड़ेंगे तो तुम जाकर प्रिन्स प्रिन्सेज बनेंगे। स्वर्ग माना स्वर्ग। वहाँ नर्क का नाम-निशान भी नहीं। धरती भी उथल-पाथल कर नई बन जाती है। यह मकान आदि सब खत्म हो जाते हैं। कहते हैं सोने की द्वारिका नीचे चली गई। नीचे कोई जाती नहीं है। यह तो चक्र चलता है। यह तीर्थ यात्रा आदि सब भक्ति मार्ग है। भक्ति है रात। जब भक्ति की रात पूरी होती है तो ब्रह्मा आते हैं दिन करने। द्वापर कलियुग है ब्रह्मा की रात, फिर दिन होना चाहिए। तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं। सब तो एक जैसा पढ़ न सके। भिन्न-भिन्न दर्जे हैं। प्रदर्शनी में देखो कितने आते हैं। 5-7 हजार रोज़ आते हैं। फिर निकलते कौन हैं! कोटो में कोई, कोई में भी कोई। लिखते हैं - बाबा, 3-4 निकले हैं, जो रोज़ आते हैं। कोई 7 रोज़ का कोर्स भी उठाते हैं, फिर आते नहीं हैं। जो देवी-देवता धर्म के होंगे वही यहाँ ठहरेंगे। साधारण गरीब ही निकलते हैं। साहूकार तो मुश्किल ही ठहरते हैं। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। चिट्ठी भी लिखते हैं। ब्लड से भी लिखकर देते हैं। फिर चलते-चलते माया खा जाती है। युद्ध चलती है तो रावण जीत लेता है। बाकी जो थोड़ा कुछ सुनते हैं वह प्रजा में चले जाते हैं। बाबा तो समझाते रहते हैं - श्रीमत पर चलना है। जैसे मम्मा बाबा और अनन्य बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हैं। महारथियों के नाम तो लिये जाते हैं ना! पाण्डव सेना में कौन-कौन हैं, उनका भी नाम बाला है। तो कौरव सेना के भी मुख्य का नाम बाला है। यूरोपवासी यादवों के

भी नाम हैं। अखबार में भी जो नामीग्रामी हैं, उनका नाम डालते हैं। उन सबकी परमपिता परमात्मा के साथ विपरीत बुद्धि है। परमात्मा को जानें तब तो प्रीत रखें। यहाँ भी बच्चे प्रीत रख नहीं सकते। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, फिर पद भ्रष्ट हो पड़ता है। जितना बाप को याद करेंगे, उतने विकर्म विनाश होंगे और पद ऊंचा मिलेगा। दूसरों को भी आप समान बनाना है, रहमदिल बनना है और अन्धों की भी लाठी बनना है। कोई अन्धे, कोई काने, कोई झुंझार होते हैं। यहाँ भी बच्चे नम्बरवार हैं। ऐसे फिर साधारण प्रजा में नौकर चाकर जाकर बनेंगे। आगे चलकर तुम सब साक्षात्कार करेंगे। ईश्वर को सर्वव्यापी कहना – यह कोई समझ नहीं है। ईश्वर तो ज्ञान का सागर है। वही आकर तुम्हें ज्ञान दे रहे हैं, राजयोग भी सिखला रहे हैं। श्रीकृष्ण की आत्मा, जिसने अब 84 जन्म पूरे किये हैं, अब वह राजयोग सीख रहे हैं। कितनी गुह्य बातें हैं। इस समय सभी बाप को भूलने के कारण महान दु:खी बन पड़े हैं। तुम बच्चे जितना-जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतनी तुम्हारे से खामियां निकलती जायेंगी, बड़ी ऊंची मंजिल है। करोड़ों से 8 मुख्य निकलते हैं। फिर 108 की माला बनती है। फिर हैं 16 हजार। यह भी भीती दी जाती है – पुरुषार्थ करने के लिए। वास्तव में 16 हजार हैं नहीं। माला है 108 की। ऊपर फूल फिर युगल दाना, नम्बरवार विष्णु की माला बनती है। पुरुषार्थ कराने के लिए कितना समझाया जाता है। जो इस धर्म के नहीं होंगे तो कुछ भी समझेंगे नहीं। स्वर्ग के सुख पाने के लायक ही नहीं। भल पुजारी बहुत हैं, वह भी आयेंगे तो प्रजा में। प्रजा पद तो कुछ नहीं है। मम्मा बाबा कहते हो तो फालो कर मम्मा बाबा के तख्तनशीन बनो। हार्टफिल क्यों होते हो! स्कूल में कोई बच्चा कहे कि हम पास नहीं होंगे तो सब कहेंगे यह डल हेड है। सेन्सीबुल बच्चे बहुत अच्छा पढ़ते हैं और ऊंच नम्बर में आते हैं। तुम बच्चे प्रदर्शनी में बहुत अच्छी सर्विस कर सकते हो। बाबा से भी पूछ सकते हो - बाबा मैं सर्विस करने लायक हूँ। तो बाबा बतला सकता है कि बच्चे अभी तुमको बहुत कुछ सीखना है अथवा लायक बनना है। विद्वान आदि के सामने समझाने वाले भी होशियार चाहिए। पहले-पहले तो यह निश्चय कराया जाता है कि भगवान आया हुआ है। बुलाते हो दूर देश के रहने वाले आओ, हमको साथ ले चलो क्योंकि हम बहुत दु:खी हैं। सतयुग में तो इतने सब मनुष्य होंगे ही नहीं। सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जायेंगी, जिसके लिए दुनिया इतनी भक्ति करती है। बाप कहते हैं मैं सबको ले जाऊंगा। सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति। निश्चय हुआ तो जीवनमुक्त बनेंगे फिर जीवनमुक्ति में भी पद है। पुरुषार्थ करना है जीवनमुक्ति में राजा-रानी पद पायें। मम्मा-बाबा महाराजा महारानी बनते हैं तो हम क्यों न पद पायें। पुरुषार्थ करने वाले छिप नहीं सकते। सारी राजधानी स्थापन हो रही है। दैवी धर्म वाले जो भी हैं आयेंगे जरूर। मम्मा बाबा राजा-रानी बनते हैं तो हम भी क्यों न पुरुषार्थ करें।

बाबा को बच्चे पत्र लिखते हैं - बाबा कभी-कभी सेन्टर पर आता हूँ। अब बच्ची की शादी